Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 8 | AUGUST 2019

वर्तमान युग में बदलते सामाजिक परिदृश्य और गांधी–दर्शन की प्रासंगिकता

श्रीमती भावना [1] | डॉ. अर्चना गोदारा

[1] सहायक आचार्य–इतिहास राजकीय नेहरू मैमोरियल महाविद्यालय, हनुमानगढ़.

[2] सहायक आचार्य–समाजशास्त्र राजकीय नेहरू मैमोरियल महाविद्यालय, हनुमानगढ.

ABSTRACT:

KEYWORDS:

आधुनिक वैज्ञानिक विकास के युग में जहां एक ओर हम आधुनिक बनने का दावा कर रहे हैं तथा एक सभ्य व विकसित समाज का दम रखते हैं, वहीं नैतिक मूल्यों का ह्रास आज समाज की सबसे बड़ी चुनौती है। नैतिक होना या नैतिकता की ओर बढ़ना का अर्थ है–अच्छाई की ओर बढ़ना। अर्थात् ऐसे कार्य जिससे किसी व्यक्ति विशेष का नहीं अपितु समाज का हित एवं कल्याण हो और यही हमारी भारतीय संस्कृति की विशेषता है। जो ''सत्यं–शिवं–सुन्दरम्'' की विचारधारा पर चलती है, अर्थात जो सत्य है, वही शिव अर्थात् कल्याणकारी है और जो कल्याणकारी है वही सुन्दर है। व्यक्ति समाज की आधारशिला है और इसका नैतिक आचरण, संस्कार सम्पन्नता ही समाज को सुदृढ़ बनाती है। परन्तु आज के युग की विडम्बना यह है कि व्यक्ति समाज को सुन्दर तो देखना चाहता है परन्तु स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन नहीं करना चाहता। ऐसे में हम कैसे एक सुन्दर समाज की कल्पना कर सकते हैं?

भारतीय साहित्य में नैतिक मूल्यों के पालन की आवश्यकता सम्बन्धी निर्देश भरे पड़े हैं, किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या हम स्वयं को उस कसौटी पर परखना चाहते हैं। समय–समय पर अनेक महापुरूषों ने इस अवधारणा को तरोताजा किया ऐसे ही एक महापुरूष थे राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी। महात्मा गांधी एक नाम नहीं अपतु एक विचारधारा है जिसका लगभग सम्पूर्ण विश्व नें पालन किया। भारत की स्वतन्त्रता के अग्रदूत होने के साथ–साथ वे एक महान चिंतक एवं दार्शनिक भी थे। उनका दर्शन समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय है। न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण मानवता और मानव जाति के लिए महात्मा गांधी एक प्रासंगिक व्यक्ति है। जिन मूल्यों को लेकर वे जिये, उन्हें किसी जाति, वर्ग, देश की सीमा में नहीं बांधा जा सकता है।

विभिन्न दर्शन ग्रन्थों, धार्मिक ग्रन्थों, आध्यात्मिक साधकों और अनेक चिन्तकों के विचारों के गहन अध्ययन, चिन्तन और मनन के उपरान्त गांधीजी ने जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया वह मूलतः आध्यात्मिक जीवन–दर्शन है। गांधी दर्शन के मूल स्तम्भ है सत्य और अहिंसा। अहिंसा के प्रति उनकी आस्था और सत्य के साथ अनगिनत प्रयोग और विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत बन गये।

गांधी जी ने अंहिसा को एक नीति और एक विश्वास के तौर पर लोगों के सामने पेश किया और उनकी इस सोच ने उन्हें दुनिया में सबसे अलग खड़ा कर दिया। गांधी जी के अनुसार हिंसा की बात चाहे किसी भी स्तर पर क्यों न की जाए, परन्तु वास्तविकता यही है कि हिंसा किसी भी समस्या का सम्पूर्ण एवं स्थायी समाधान नहीं है। गांधीजी विश्व इतिहास में अहिंसा के सबसे बड़े शिक्षक आर प्रचारक हुए। गांधीजी ने ही इतिहास में पहली बार अहिंसा को समग्र जीवन और दर्शन के रूप में स्वीकार किया और उसके आधार पर समाज व राजनीति की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की।

युद्व किसी भी देश को मजबूत नहीं करता। वह सिर्फ उसे कमजोर बनाता है। जिसमें संसाधन और मनुष्य की बलि चढ़ती है। गांधीजी इस बात को अच्छी प्रकार समझते थे इसलिए उनका पूरा सिद्वान्त और उनकी लड़ाई सत्याग्रह पर चलकर हिंसा के खिलाफ खड़ी हुई। उनके ''सत्य के प्रति आग्रह'' ने विश्व राजनीति को एक नये आयाम प्रदान किये। गांधीजी ने अपने सपनो के भारत में जिस दृष्टि की कल्पना की थी उसमें व्यापकता थी। गांधीजी ने भौतिकवाद की बजाय आध्यात्मकवाद पर बल देने और सत्य तथा ईमानदारी से परिपूर्ण जीवन को प्रमुखता दी है। जिसमें से ही उनका ''सादा जीवन उच्च विचार'' का आदर्श विकसित हुआ है। गांधीजी ने हमेशा साधनों की पवित्रता पर बल दिया है उन्होनें ऐसी कोई बात विश्व के समक्ष नहीं रखी जिसका वे स्वयं आचरण न कर सकें। यही कारण है कि गांधीजी राजनीति में रहते हुए भी पानी के कमल की भांति उससे कहीं ऊपर थे। गांधी की विचारधारा राजनीतिक चिंतन की सीमाओं को लांघकर मानवीय विचारधारा का रूप ले चुकी थी परन्तु यहां प्रश्न उठता है कि क्या वर्तमान दौर में भी हम गांधी दर्शन को अपने जीवन में, व्यवहार में अपना पा रहे हैं? गांधीजी सत्ता को समाज सेवा का साधन मानते थे लेकिन वर्तमान दौर में तो इस युग के नेताओं ने सत्ता का जमकर दुरूप्योग किया है और आज राजीनति का समाज सेवा का साधन नहीं बल्कि व्यवसाय समझा जाता है। यहां तक कि वर्तमान दौर में तो जीवन के हर क्षेत्र में ईमानदारी एवं सत्यता का लोप होता जा रहा है। जो नैतिकता गांधीजी के लिए आचरण का गुण थी वह आज केवल कपट बनकर रह गयी है। सादगी अब निर्धनता तथा भोंडे प्रदर्शन सम्पन्नता का प्रतीक बन गयी है।

प्रश्न यह है कि गांधीवाद की ऐसी अवहेलना उस देश में क्यों हुई है, जो गांधी दर्शन को आज भी अपना आदर्श मानता है? क्या आज के स्वतन्त्र तथा लोकतान्त्रिक देश में इसकी कोई प्रासंगिकता नहीं है ? क्या आज गांधी दर्शन बेमानी हो गया है?

सच तो यह है कि गांधी दर्शन के अधिकतर बिन्दु किसी विशेष युग के लिए नहीं अपितु सभी कालों और परिस्थितियों में प्रासंगिक है। अहिंसा,

सत्य, सादा जीवन, स्वदेशी, धर्म निरपेक्षता आदि तत्व भारतीय समाज की वर्तमान आवश्यकताओं व उपेक्षाओं के अनुकूल है।

आज वैश्विक स्तर पर व्याप्त हिंसा, मतभेद, बेरोजगारी तथा तनावपूर्ण वातावरण में बार–बार यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि गांधी के सत्य व अहिंसा पर आधारित दर्शन और विचारों की आज कितनी प्रासंगिकता महसूस की जा रही है।

अपने जन्म के 148 साल बाद भी गांधी जी न केवल भारत बल्कि दुनियाभर के विद्वानों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, मीडिया, नीति निर्माताओं आदि का ध्यान लगातार अपनी ओर खींचते रहते हैं।

20वीं शताब्दी के प्रभावशाली लोगों में नेल्सन मंडेला, दलाई लामा, मदन टेरेसा, मार्टिन लूथर आदि ऐसे लोग हैं जिन्होनें अपने–अपने देशों में गांधी की विचारधारा का अपनाया किया और सफलतापूर्वक अहिंसा से अपने देशों में, क्षेत्रो में परिवर्तन लाए। यह हमारे सामने इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि महात्मा गांधी के बाद भी ऐसे व्यक्ति हुए जिन्होनें भारत के बाहर भी अहिंसा के जरिये अन्याय के खिलाफ सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी गई और उसमें विजय भी हुये।

आज हिंसा आर्थिक मंदी, भूख, बेरोजगारी और परस्पर विद्वेष जैसे संकट से विश्व जूझ रहा है और ऐसे समय में दुनिया को न केवल गांधी दर्शन याद आ रहा है अपितु गांधी दर्शन को आत्मसात करने की आवश्यकता भी शिद्दत से महसूस की जा रही है।

इतिहासकार और लेखक **रामचन्द्र गुट्टा** के अनुसार, गांधीजी के चार सिद्वान्त आज भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में प्रासंगिक हैः–

1. जन विरोधी सरकार या कानून के खिलाफ अहिंसक प्रदर्शन।
2. एक दूसरे के धर्म को समझना या उसका सम्मान करना।
3. ऐसी आर्थिक नीति बनाना, जिससे सभी का विकास हो और प्रकृति को कम से कम नुकसान पहुंचे।
4. व्यवहार में शिष्टाचार और जनता से जुडे कार्यों में पारदर्शिता।

ये चारो ही सिद्वान्त आज सबसे अधिक प्रासंगिक है यदि इन्हें अपना लिया जाये तो न हिंसक प्रदर्शन होंगे न कोई सरकार भ्रष्ट होगी।

वर्तमान समाज की गलाकाट प्रतिस्पर्धा में जब व्यक्ति ही व्यक्ति का दुश्मन बनकर उभर रहा है तो ऐसे में हमें गांधीजी के नैतिक आचरण, नैतिक आदर्शों की आवश्यकता स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

वर्तमान समाज में जब गांधीजी के सिद्वान्तों की प्रासंगिकता की बात होती है ता आज चाहे भारत का फैशन बल युवा हो या ग्रामीण बेरोजगार युवा सभी के गांधीजी प्रिय पात्र है। महात्मा गांधी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं अनुकरणीय है जितने अपने वक्त में थे। गांधीजी का बचपन, उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचार, सत्यग्रह, ग्रामोद्योग, अस्पृश्यता, स्वावलम्बर एवं अन्य सामाजिक चेतना के विषय आज के युवाओं के शोध व शिक्षण के प्रमुख क्षेत्र है।

वर्तमान युवा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। उसकी सोच निरकुंश है। वह अपने ऊपर किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहता है ऐसी परिस्थिति में गांधीजी के विचारों की सर्वाधिक आवश्यकता आज के युवाओं के है। पाश्चात्य सभ्यता से सराबोर और आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था का शिकार, एकल जीवन की ओर उन्मुख आज का युवा गांधी से कुछ सीख सकता है तो वह यह है कि किसी भी ऐसी चीज का इस्तेमाल करना अनैतिक है जो जनसाधारण को सुलभ नहीं करायी जा सकती। इसका सार तत्व है कि तुम तब तक सुखी नहीं हो सकते जब तक तुम्हारा समाज सुखी नहीं हो सकता।

आज के इस आर्थिक युग में महात्मा गांधी की जरूरत तब और ज्यादा हो जाती है, जब इन्सान नागरिक से ज्यादा ग्राहक बनने को उतारू है। आंतरिक और ब्राह्य स्वच्छता से ज्यादा वह आर्थिक स्वतन्त्रता में डूबा नजर आ रहा है, वो भूल गया कि बाहरी विकास से ज्यादा आन्तरिक विकास की आवश्यकता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि साम्प्रदायिक कट्टरता आर आतंकवाद के इस वर्तमान दौर में गांधी और उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता और बढ़ गयी है। क्योंकि उनके सिद्वान्तों क अनुसार साम्प्रदायिक सद्भावना के लिए सभी धर्मों और विचाराधाराओं का समन्वय आवश्यक है। आज दुनिया के किसी भी देश में शांति मार्च का निकालना हो अथवा अत्याचार व हिंसा का विरोध किया जाना हो अथवा हिंसा का जवाब अहिंसा से दिया जाना हो, ऐसे सभी अवसरों पर लोगों को गांधी जी की याद आती है और हमेशा आती रहेगी। अतः यह कहने में कोई भी हर्ज नहीं कि गांधी, उनके विचार, उनके दर्शन तथा उनके सिद्वान्त कल भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं तथा भविष्य में भी उनकी प्रासंगिकता बनी रहेगी।

गांधी जी का यह कथन आज भी समाचीन है कि – ''इस संसार में हमारी जरूरत के लिए पर्याप्त संसाधन उपलबध हैं, परन्तु हमारे लालच के लिए नहीं।''

वैश्वीकरण के इस दौर में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता इस बात से भी पता चलती है कि संयुक्त राष्ट्र उनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर को **''विश्व अंहिसा दिवस''** के रूप में आयोजित करता है।

REFERENCES

1. चतुर्वेदी,एम.एस. : प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर, 2002

2. जाटव, डी.आर : डॉ. बी..आर. अम्बडकर का समाज दर्शन, समता साहित्य सदन, जयपुर 1990

3. दादा धर्माधिकारी : गांधीजी की दृष्टि, सव सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1992

4. मशरूबाला, किशोरीलाल : ''गांधी विचार दोहर'' नवजीवन पब्लिकेशन हाउस, अहमदाबाद

5. धवन, गोपीनाथ : ''सर्वोदय तत्व दर्शन'' नवजीवन पब्लिकेशन हाउस, अहमदाबाद

6. नन्दा बी.आर. : महात्मा गांधी का जोवन, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986

7. मिश्र, डॉ. अर्जुन : गांधी : एक अध्ययन, राज पब्लिकेशन मेरठ, 2017